त्रिमूर्ति

परमपिता+परमात्मा शिव से प्राप्त रचयिता और रचना के बारे में इस प्रायः लुप्त ज्ञान और योग से पुनः नर से श्री नारायण या श्री राम और नारी से श्री लक्ष्मी या श्री सीता पद प्राप्त हो रहा है।

परमपिता+परमात्मा का नाम और रूप

ज्ञानामृत के सागर परमप्रिय भगवान शिव कहते हैं :-

प्रिय वत्सों ! मैं नाम और रूप से न्यारा व सर्वव्यापी नहीं हूँ; बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त रूप 'ज्योतिर्लिंगम्' है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति शिव' भी कहलाता हूँ। मेरा अव्यक्त ज्योतिर्लिंगम् रूप न तो देवताओं के सूक्ष्म शरीर के रूप के समान है और न ही मनुष्यात्माओं के स्थूल शरीर के सदृश्य है। इस कारण मुझे 'निराकार' भी कहा जाता है।

परमधाम

मैं 'निराकार' अर्थात् अशरीरी परमपिता स्थूल देहधारी मनुष्यों की इस सृष्टि से तथा सूक्ष्म देहधारी देवताओं के लोक से भी पार 'ब्रह्मलोक' में निवास करता हूँ। सालिग्राम रूपी मनुष्यात्माएँ भी निर्वाण अवस्था में ब्रह्मलोक में ही परमब्रह्मज्योति महतत्व में निवास करती हैं। वहाँ से ही हर एक अशरीरी आत्मा अपने-2 समय पर इस मनुष्य-सृष्टि में आकर अपने-2 अनादि संस्कारों के अनुसार अनादि निश्चित लीला करती है। मैं गीता का निराकार भगवान भी उसी परमधाम से संगम समय पर मनुष्य-सृष्टि-मंच पर अपना अनादि कर्तव्य करने आता हूँ।

रचना का रहस्य

बहुत काल से बिछड़े हुए प्रिय दैवी वत्सों,

पाँच विकारों रूपी माया से हारे हार, माया पर मेरे द्वारा जीते जीत का अर्थात् आधा कल्प हार, आधा कल्प जीत का पाँच मुख्य युगों, पाँच मुख्य धर्मों वाला एक अनादि बना-बनाया सृष्टि-ड्रामा है, जो कल्प-2 (हर 5000 वर्ष) फिर से रिपीट होता रहता है, जिसका क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य ऐक्टर, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाला पारलौकिक परमप्रिय परमपिता+परमात्मा शिक्षक-सद्गुरू, पतित-पावन, निराकार, चैतन्य, जन्म-मरण रहित, निराकार सो साकार गीता का भगवान त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का रचयिता) शिवबाबा वा सोमनाथ मैं हूँ। मैं कल्प-कल्प-कल्प के सुहावने धार्मिक (Auspicious) संगमयुग (Confluence Yug) में, सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता (Deity) धर्म की ब्रह्मा द्वारा सहज ज्ञान और सहज राजयोग बल से स्थापना, कलियुगी अनेक आसुरी धर्मों का शंकर द्वारा महाभारी महाभारत, मूसलों की लड़ाई और प्राकृतिक आपदाओं से विनाश और विष्णु द्वारा दैवी धर्म की पालना कराने एक ही बार अवतरित होता हूँ।

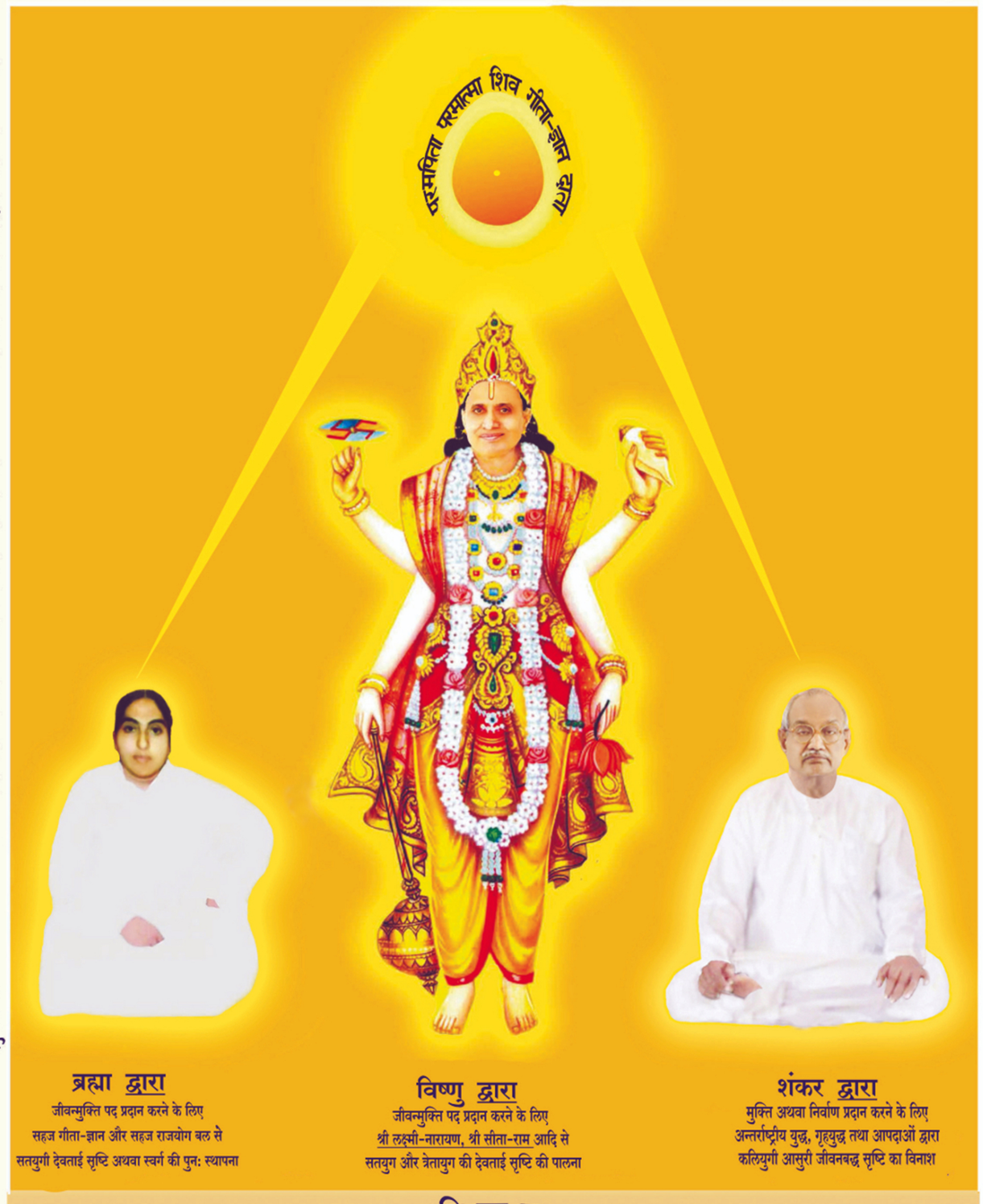

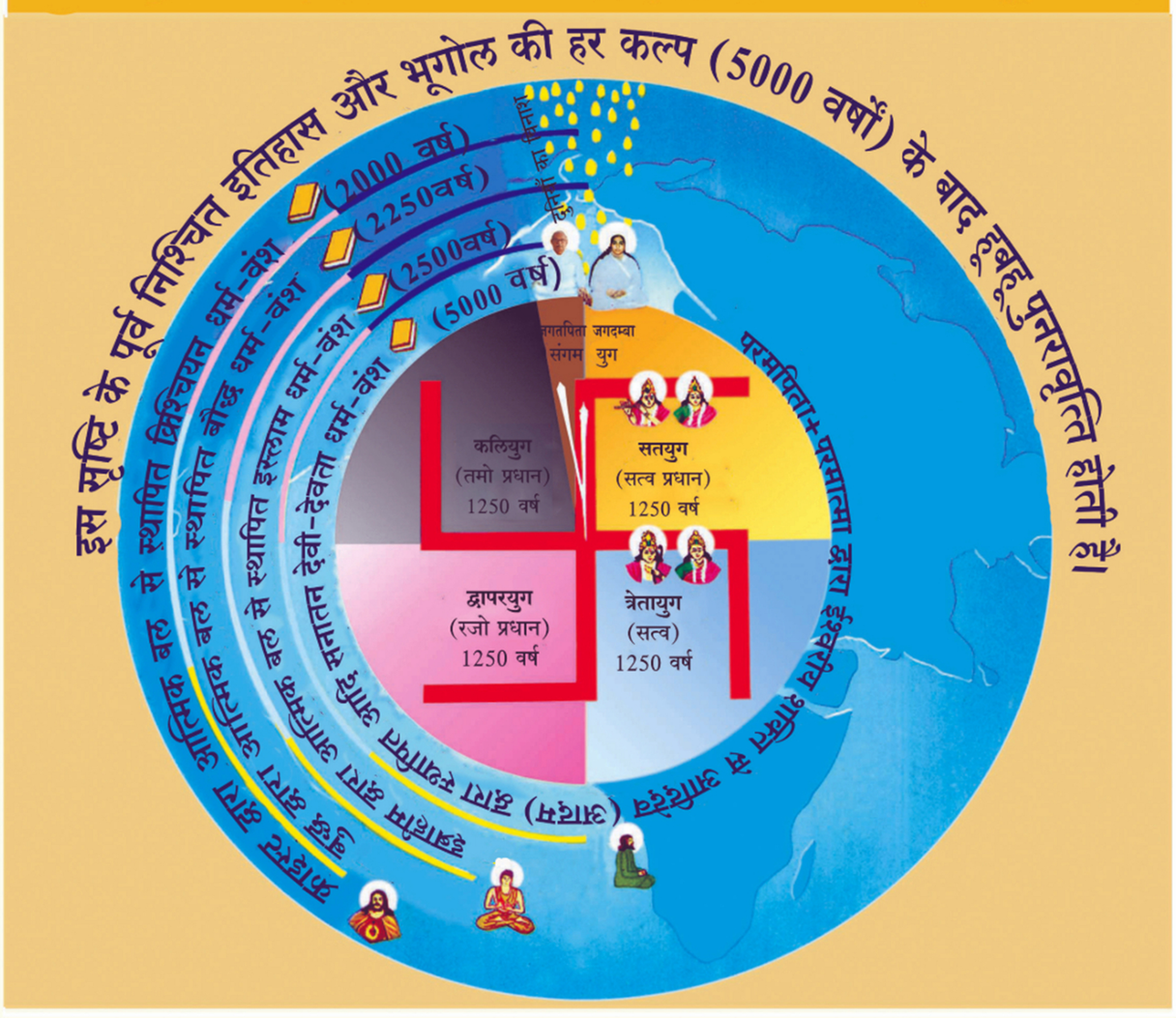

अवतरण का समय

हे वत्सों! कलियुग के अन्त तक जन्म-मरण में आते-2 सभी धर्म-संस्थापक और उनकी वंशावलियों की अन्य सभी मनुष्यात्माएँ अपनी सुख-दुःख की चारों अवस्थाओं को पार कर अति प्रबल माया अर्थात् विकारों के कारण धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, योग भ्रष्ट और आसुरी स्वभाव वाली हो जाती हैं, तब मैं ही जन्म-मरण, सुख-दुःख, लेप-क्षेप से न्यारा, सदा एकरस, 'जागती-ज्योति', सबका पारलौकिक परमपिता+परमात्मा शिक्षक-गुरू, धर्मराज, त्रिमूर्ति और त्रिकालदर्शी अर्थात् सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाला योगेश्वर, सर्वशक्तिमान, विश्व-अधिकारी, पतित-पावन हूँ, सबको माया के बन्धन से छुड़ाने, दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि द्वारा मुक्तिधाम और जीवन्मुक्तिधाम की राह दिखाने और सबके विकर्म विनाश कर सद्गति करने अर्थ आत्माओं को उनके मूल, पवित्र पारलौकिक अवस्था में लाने के लिए तीन दिव्य कर्म करता और कराता हूँ।

दिव्य जन्म और कर्तव्य

स्थापना: मैं कलियुग के अन्त और नए सतयुग के आदि के संगम समय परमधाम से अवतरित होकर श्री कृष्ण अर्थात् श्री नारायण के चौरासीवें जन्म के साधारण वृद्ध मनुष्य-तन में प्रवेश करता हूँ। मेरे ऐसे अलौकिक जन्म के पश्चात् उस मनुष्य को 'आदिदेव परमब्रह्मा' या 'आदम' कहा जाता

है। उसके मुख-कमल द्वारा मैं पुनः प्रायः लुप्त गीता-ज्ञान और योग की शिक्षा देता हूँ। इस ज्ञान व योग द्वारा 'ब्रह्मा' और उनकी मुखवंशावली 'सरस्वती' भविष्य सतयुगी सृष्टि के आरम्भ में पुनः श्री नारायण और श्री लक्ष्मी (स्वयंवर पूर्व श्री कृष्ण और श्री राधे) पद पाते हैं। इस ज्ञान और योग के बल से पाँचों विकारों पर विजय प्राप्त कर सत्वप्रधान संस्कार धारण करने वाले नर-नारी सतयुगी सूर्यवंश में और सत्वगुण सामान्य संस्कारों वाले नर-नारी त्रेतायुगी चन्द्रवंश जीवन्मुक्त देवी-देवता पद प्राप्त करते हैं। इस प्रकार मुझ जगद्गुरू शिव द्वारा कल्प में एक ही बार पु.संगमयुग में ज्ञानामृत प्राप्त करने के बाद सतयुग और त्रेतायुग के सर्वोत्तम प्रारब्धकाल में ज्ञान या साधना की आवश्यकता ही नहीं होती।

विनाश : स्थापना की समाप्ति तक मैं ही शंकर द्वारा यूरोपवासी वैज्ञानिकों अर्थात् यादवों तथा भारतवासी देह-अभिमानियों अर्थात् कौरवों को विनाश अर्थ प्रेरता हूँ। इस प्रकार ऐटम व हाइड्रोजन बम्बों, गृहयुद्धों, प्राकृतिक आपदाओं आदि द्वारा महाविनाश करा कर सभी आत्माओं को वापस मुक्तिधाम ले जाता हूँ।

पालना : इसके पश्चात् विष्णु चतुर्भुज लक्ष्य द्वारा स्थापित की हुई सतयुगी तथा त्रेतायुगी जीवन्मुक्त दैवी सृष्टि की पालना भी मैं ही श्री लक्ष्मी-श्री नारायण, श्री सीता-श्री राम आदि द्वारा कराता हूँ।

अब परमपिता+परमात्मा शिव भगवान कहते हैं :-

जो मनुष्यात्मा सबको पवित्रता-सुख-शांति देने वाले, सृष्टि के रचयिता मुझ परमपिता+परमात्मा को तथा सृष्टि लीला के मुख्य अभिनेताओं (ऐक्टर्स) के जन्म-पुनर्जन्म की कर्म-कहानी को तथा विश्व के इतिहास के कुल समय और पुनरावृत्ति के रहस्य को अब मुझ त्रिकालदर्शी परमपिता+परमात्मा शिव द्वारा नहीं जानता या जान कर नर से नारायण बनने का सर्वोत्तम पुरुषार्थ नहीं करता, वह मनुष्य मंदबुद्धि है।

तत्कालीन मुख्य केन्द्र
ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय (ज्ञान यज्ञ)
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू (राजस्थान)
वर्तमानकालीन अन्य आध्यात्मिक परिवार
आध्यात्मिक विश्वविद्यालय
1. ए-1, 351-352, विजयविहार, रिठाला, दिल्ली- 110085
2. 5/26 A, सिकत्तरबाग, जिला- फर्रुखाबाद- 209625 (यू.पी.)
3. ग्राम- कम्पिला, जिला- फर्रुखाबाद- 207505 (यू.पी.)
और जम्मू, चण्डीगढ़, भोपाल, मुम्बई, हैदराबाद, बैंगलूर

परमपिता+परमात्मा और देवताओं आदि का यह चित्र दिव्य चक्षु द्वारा साक्षात्कार तथा दिव्य बुद्धि द्वारा अनुभव ही के आधार पर बनाया गया है।